

**व**

**व** हिंदी वर्णमाला का उनतीसवाँ व्यंजन वर्ण अंतःस्थ वर्णों के वर्ग का चौथा वर्ण यह अंतःस्थ वर्ण 'उ' स्वर का प्रतिनिधित्व करता है संधि होते समय 'उ' के आगे अन्य स्वर आने पर 'उ' 'व' में परिवर्तित हो जाता है जैसे- सु+आगत=स्वागत, बोलियों के प्रभाव से या अन्य कारणों से 'व' 2. 'ब' या 'उ' में परिवर्तित हो जाता है जैसे- विवाह-बिबाह, स्वभाव-सुभाउ अव्य. (फा.) और जैसे- लडका व लडकी।

**वंक** पुं. (तत्.) नदी का घुमाव वि. टेढ़ा, बाँका।

**वंकट** वि. (तद्.) 1. टेढ़ा, बाँका 2. जहाँ पहुँचना कठिन हो, दुर्गम 3. कठिन।

**वंकनाल** पुं. (तत्.) सुनारों का एक औजार, जो एक टेढ़ी नली के रूप में होता है वि. 1. सुनार इस नली के द्वारा फूँक मारकर दीपक की लौ को सोने के टुकड़े पर केंद्रित कर उसे पिघलाते हैं 2. प्राचीन काल में वैद्य भी धातु पिघलाने के लिए इसका प्रयोग करते थे।

**वंकनाली** स्त्री. (तत्.) योग. शरीर में स्थित सुषुम्ना नामक नाड़ी।

**वंकर** पुं. (तत्.) दे. वंका।

**वंकिम** वि. (तत्.) टेढ़ा, मुड़ा हुआ पु. आवारा, गुंडा।

**वंक्षु** स्त्री. (तत्.) वर्तमान पाकिस्तान में बहने वाली एक नदी जो हिंदूकुश पर्वतमाला से निकलकर अरब सागर में मिलती है।

**वंग** पुं. (तत्.) 1. बंगाल का प्रदेश (जिसमें वर्तमान पश्चिम बंगाल तथा बांग्ला देश सम्मिलित हैं) 2. राँगा नामक धातु पर्या. रंगा।

**वंगज** वि. (तत्.) वंग (रांगा) से उत्पन्न होने वाला या वंग (बंगाल) में उत्पन्न होने वाला पुं 1. सिंदूर 2. बंगाली व्यक्ति 3. पीतल नामक धातु।

**वंगाष्टक** पुं. (तत्.) आयु. एक ओषधि जो राँगा आदि आठ धातुओं के भस्मों से तैयार की जाती है।

**वंगीय** वि. (तत्.) 1. बंगाल से संबंधित 2. राँगे से संबंधित।

**वंचक** वि. (तत्.) 1. ठगने वाला 2. धोखा देने वाला 3. धूर्त।

**वंचकता** स्त्री. (तत्.) 1. वंचक होने का भाव 2. वंचक का कोई कृत्य।

**वंचन** पुं. (तत्.) धोखा देने या ठगने की क्रिया या भाव जैसे- कर-वंचन अर्थात् कर (टैक्स) देने में धोखाधड़ी करना।

**वंचनीय** वि. (तत्.) ठगा जाने योग्य, धोखा दिए जाने योग्य।

**वंचयिता** वि. (तत्.) दे. वंचक।

**वंचित** वि. (तत्.) 1. ठगा हुआ 2. धोखा खाया हुआ 3. वह जिसे प्राप्य वस्तु प्राप्त न हो सकी हो 4. वह जिससे कोई वस्तु छीन ली गई हो जैसे- वह एक बार राज्य मिलने के बाद भी राज्यसुख से वंचित ही रहा।

**वंच्य** वि. (तत्.) दे. वंचनीय।

**वंछना** स.क्रि. (तद्.) चाहना, इच्छा करना।

**वंजु** पुं. (तत्.) एक विशेष वृक्ष, शाहबलूत या बलूत नामक वृक्ष जिसकी पत्तियाँ चौड़ी तथा लकड़ी कठोर होती है, ओक नामक वृक्ष।

**वंजुल** पुं. (तत्.) 1. बेंत या नरकुल 2. अशोक वृक्ष 3. एक विशेष पुष्प 4. लंबी गरदन वाला एक पक्षी।

**वंट** वि. (तत्.) 1. अविवाहित, कुँआरा 2. (वह पशु) जिसकी पूँछ कटी हुई हो पुं. हँसिया, चाकू इत्यादि की मूठ या बेंट।

**वंटक** वि. (तत्.) बाँटने वाला पुं. 1. बाँटने वाला व्यक्ति 2. बाँटने पर प्राप्य धन, वस्तु या अंश/भाग।

**वंटन** पुं. (तत्.) 1. बाँटने की क्रिया या भाव 2. किसी वस्तु को अनेक भागों में विभाजित करने की प्रक्रिया या भाव, विभाजन।